खड़ी बोली हिंदी का इतिहास और वर्तमान

रजनी सिंह*

मानव अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक साधन को अपनाता है, वह भाषा है। भारत की विविधता का क्षेत्र संस्कृति, प्रकृति, तीज-त्यौहार के साथ-साथ भाषा तक फैला हुआ है। पंजाबी, मैथली, गुजराती, तमिल, मलयालम, मराठी, उड़िया, बंगाली और हिंदी के साथ-साथ अन्य सभी भाषाओं में हिंदी सर्वाधिक जनमानस द्वारा बोली तथा समझी जाती है और इसका जो रूप सबसे अधिक प्रचलित है, वह 'खड़ी बोली हिंदी' है। यही कारण था कि खड़ी बोली हिंदी को 14 सितंबर 1949 ई. को संवैधानिक रूप से राजभाषा (Official language) घोषित किया गया। यहाँ पर ये जोड़ना आवश्यक है कि खड़ी बोली हिंदी का क्षेत्र राजभाषा के कारण नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा (National language) (जनसामान्य के मध्य सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा) की वजह से इतनी विस्तृत एवं प्रयोग में लाई जाती है।

खड़ी बोली को देहलवी, कौरवी तथा स्थानीय हिंदुस्तानी भाषा भी बोला जाता है। बोल चाल की भाषा में इसका सर्वाधिक प्रयोग उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, तथा उत्तर भारत में होता है। इन्साईक्लोपिडिया ब्रिटानिका शब्दकोश के अनुसार, हिंदी भारत-यूरोपिय भाषा परिवार की इंडो-ईरानी शाखा के भीतर इंडो- आर्यन समूह की सदस्य है। खड़ी बोली हिंदी का विकास आधुनिक काल के पूर्वार्द्ध में माना जा सकता है। यदि प्रारंभिक स्तर पर खड़ी बोली के विकास का श्रेय किसी रचनाकार को दिया जा सकता है तो वह अमीर खुसरो के अलावा कोई अन्य नहीं हो सकता। इनके द्वारा रचित पहेलियाँ, पद एवं दोहे आज भी जनसामान्य के बीच काफ़ी मकबूल हैं जैसे-

'एक थाल मोती से भरा,
सबके सर पर औंधा पड़ा।'

खड़ी बोली हिंदी के विकास को पूरी तरह से समझने के लिए थोड़ा पीछे जाने की ज़रूरत

* मकान नं. 337, सिंहासनपुर (गायत्रीनगर), पोस्ट-कूड़ाघाट, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश-273008

है। संस्कृत अन्य भाषाओं की भाँति हिंदी की भी मूलभाषा है। इसके विकास क्रम को एक छोटे से उदाहरण से समझा जा सकता है-

संस्कृत
(1500 ई0पू0-500ई0पू0)
पाली
(500ई0पू0-पहली ईसवीं)
प्राकृत
(पहली ईसवीं तक)
अपभ्रंश
(500ई0-1000ई0)

अपभ्रंश को खड़ी बोली हिंदी के निर्माण का प्रारंभिक काल माना जाता हैं। इसके बाद पुन: हिंदी भाषा को पाँच उपभाषाओं में बाँटा गया है, जिसमें –

1. पश्चिमी हिंदी
2. पूर्वी हिंदी
3. राजस्थानी
4. पहाड़ी
5. बिहारी

पश्चिमी हिंदी नामक उपभाषा से पाँच बोलियों का विकास हुआ जिनमें –

1. खड़ी बोली (कौरवी)
2. ब्रजभाषा
3. हरियाणवी
4. बुंदेली
5. कन्नौजी

ध्यान देने वाली बात यह है कि उपभाषा पश्चिमी हिंदी से निकलने वाली उक्त बोलियों में जनसामान्य के बीच खड़ी बोली (कौरवी) सबसे अधिक लिखी, समझी एवं बोली जाती है, किंतु हमेशा से ऐसा नहीं था। मुगलकाल में खड़ी बोली का विकास उचित रूप से न हो पाने का सामाजिक एवं राजनैतिक कारण स्पष्ट करते हुए शिवदान सिंह चौहान का मत है कि, "खड़ी बोली सांस्कृतिक पुर्नजागरण के प्रारंभिक और मध्यकाल तक अपवाद बनी रही। इसका मुख्य कारण यह है कि खड़ी बोली दिल्ली-मेरठ के आस-पास की बोली थी, जहाँ मुहम्मद गौरी के समय से ही मुसलमान शासकों का साम्राज्य स्थापित हो गया था।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि खड़ी बोली का मूल स्थान दिल्ली तथा मेरठ के आस-पास का क्षेत्र था। किसी भी सामाजिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक घटना का प्रभाव उस समाज के व्यक्तियों, संस्थान व भाषा पर पड़ता है। दिल्ली-मेरठ ऐसे क्षेत्र हैं जो आज की भाँति पहले भी अपना केंद्रीय महत्व रखते थे। चाहे मुगल हों अथवा अंग्रेज़ सभी ने अपने शासन की बागडोर यहीं बैठकर थामी, जिससे यहाँ की साहित्यिक भाषा का विकास उस तरह से नहीं हो पाया जैसा कि अन्य भारतीय भाषाओं का हुआ। जिन भाषाओं को शासकीय महत्व प्राप्त था वही उस समय फलफूल पाई। जिसके कारण इन भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रवेश आसानी से यहाँ की स्थानीय भाषा खड़ी बोली हिंदी में हो गया। जिसने हिंदी की शब्द संपदा को बढ़ाने में सबसे ज़्यादा योगदान दिया।

खड़ी बोली हिंदी के विकास में कलक्ता के फ़ोर्टविलियम कॉलेज की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी। अंग्रेज़ शासकों ने भारत में अपनी शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए अपने अधिकारियों

को भारत की भाषा एवं बोली सीखने का निर्देश दिया। जिससे वे जनता के बीच अपनी पैठ बना सकें और हेजेमनी* के तहत उनकी भाषा का प्रयोग करके उन पर ही शासन कर सकें। आज विडंबना यह है कि भारत का पढ़ा-लिखा वर्ग अंग्रेज़ी भाषा की हेजेमनी के भीतर कैद होकर स्वयं ही गुलाम बनने को प्रस्तुत है। फ़ोर्टविलियम कॉलेज में 'भारवा (भाषा) विभाग में लल्लू लाल तथा सदल मिश्र को नियुक्त किया गया, जिनको अनुवाद कार्य तथा पाठ्यक्रम के निर्माण का कार्य सौंपा गया। उस समय भाषा विभाग को भारवा विभाग के नाम से संबोधित किया जाता था। जिससे खड़ी बोली के विकास एवं प्रचार-प्रसार में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। लेकिन अभी खड़ी बोली हिंदी सामान्य जनमानस का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी। सत्ता और जनता के इस संघर्ष में पहले तो शासन द्वारा खड़ी बोली के विकास में कार्य किए गए। फिर आगे चलकर छापाखानों तथा प्रिंटिग प्रेस के चलन ने इस भाषा के विकास को गति प्रदान की।

खड़ी बोली हिंदी के विकास एवं प्रसार में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान अविस्मरणीय है, उनके योगदान का उल्लेख करते हुये रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि, "मुंशी सदासुख लाल की भाषा साधु होते हुए भी पंड़िताऊ पन लिए हुए थी, लल्लू लाल में ब्रजभाषापन और सदल मिश्र में पूरबीपन था। राजा शिवप्रसाद का उर्दूपन शब्दों तक ही परिमित न था वाक्यविन्यास तक में घुसा हुआ था, राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा विशुद्ध और मधुर तो अवश्य थी, पर आगरा की बोलचाल का पुट उसमें कम न था। भाषा का निखरा और सामान्य रूप भारतेंदु की कला के साथ ही प्रकट हुआ।"[2] भारतेन्दु हिंदी नवजागरण के अगुवा थे, उन्होंने अपने लेखन से न केवल हिंदी खड़ी बोली को समृद्ध किया बल्कि तत्कालीन परिवेश को भी प्रस्तुत किया। उनके 'अंधेर नगरी' नामक नाटक से एक उदाहरण पर्याप्त होगा-

"हिंदू चूरन इसका नाम, विलायत पूरन इसका काम,
जब से चूरन हिंदी में आया, इसका धन बल सभी घटाया।"

कहना न होगा कि भारतेन्दु एवं उनके लेखक मंडल के पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी, लाला श्री निवासदास आदि ने खड़ी बोली हिंदी को परिमार्जित करने के साथ-साथ नवजागरण एवं तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को अपने लेखन में शामिल किया। इस काल की भाषा यद्यपि ब्रजभाषा का पुट लिए हुए थी तथापि यह जनसामान्य की भाषा एवं विचारों को पहले से कहीं अधिक व्यक्त करने वाली थी। इस काल में खड़ी बोली ने लगभग एक भाषा का रूप ले लिया था, जिसके कारण नाटक, निबंध एवं पत्रकारिता भी इसी भाषा में होने लगी थी।

भारतेन्दु युग के बाद शिक्षा को हिंदी क्षेत्र का केंद्र बना दिया गया। खड़ी बोली हिंदी कविता की भाषा बनने की ओर भी अग्रसर हो चली थी। भारतेन्दु के बाद खड़ी बोली हिंदी को स्थापित करने में यदि किसी दूसरे साहित्यकार को शामिल किया जा सकता

* जहाँ किसी प्रतिद्वन्दी पर अपना प्रभाव, अधिकार एवं वर्चस्व स्थापित करने के लिए युद्ध या हिंसा के स्थान पर अपनी भाषा, संस्कृति एवं विचारधारा का इस्तेमाल अदृश्य अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।

है तो वह महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। महावीर प्रसाद ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली हिंदी में लिखी कविता तथा गद्य को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया तथा इसे व्याकरणिक रूप से एक शुद्ध भाषा बनाने का भी सफ़ल प्रयास किया। लेकिन, कविता में व्यापक तौर पर खड़ी बोली के प्रयोग का श्रेय श्रीधर पाठक को है।

भारत में अकबर के समय से लेकर लगभग तीन शताब्दियों तक फ़ारसी राजभाषा रही और सन् 1833 के बाद से निचले स्तर पर उर्दू और उच्च स्तर पर अंग्रेज़ी राजभाषा के तौर पर विराजमान रही है। परंतु इसके बाद के दौर में, सारे देश की संपर्क भाषा हिंदी ही रही है। किसी भाषा को विस्तृत क्षेत्र में एकसमान रूप से स्थापित करने के लिए, उसका मानक स्वरूप होना बेहद ज़रूरी है। जिससे वह एक ही अर्थ में समझी व बोली जा सके। भारत जैसे देश में जहाँ 'कोस-कोस पर पानी बदले, तीन कोस पर बानी।' बानी अर्थात वाणी या बोली तो ऐसे देश में किसी एक भाषा का मानक रूप निर्धारित करना अत्यंत दुष्कर है। इस संदर्भ में खड़ी बोली हिंदी को एक भाषा के रूप में पहचान दिलाने में उसके मानकीकरण* की प्रक्रिया की अहम् भूमिका रही है। 'मानकीकरण किसी भाषा के निश्चित स्वरूप को निर्धारित करने की एक पद्धति है।' यदि किसी भाषा का स्वरूप ही अनिश्चित होगा तो उसके अधिकाधिक प्रयोग की संभावनाएँ भी कम होती जाएगी। खड़ी बोली के विकास एवं उसके मानक स्वरूप के निर्धारण में विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों की उल्लेखनीय भूमिका रही है। साथ ही अन्य विषयों के विभिन्न विभागों जैसे- विज्ञान, आयुर्विज्ञान, अभियान्त्रिकी आदि विश्वविद्यालयी विषयों पर अनेक शब्दावलियों को प्रकाशित करके हिंदी भाषा के मानक स्वरूप को निर्धारित करने तथा इसके प्रयोग को बढ़ाने में बहुत अहम भूमिका निभाई। वहीं सरकारी संस्थाओं, बैकों आदि में एक हिंदी भाषा अधिकारी की नियुक्ति, हिंदी पखवाड़ा तथा हिंदी भाषा में कार्य करने के निर्देशों ने मानकीकरण के कार्य को एक सकारात्मक दिशा प्रदान की।

आज खड़ी बोली, हिंदी भाषा के रूप में पूर्णत: स्थापित हो चुकी है। आधुनिक टेक्नॉलजी ने खड़ी बोली हिंदी के प्रयोग को विश्वव्यापी बनाने में सबसे अधिक योगदान दिया है। आज यह इंटरनेट पर विभिन्न माध्यमों जैसे फ़ेसबुक, बी.बी.सी. हिंदी आदि के द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज़ करा रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि हिंदी भारत की उन सात भाषाओं में से एक है जिसे एक सर्च इंजन के रूप में विकसित किया जा सका है। किंतु मानक इंकोडिंग के अभाव में यह अभी तक संभव नहीं हो पाया है। जैसा पहले ही उल्लेख किया गया है कि विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं में प्रचलित शब्दों के प्रवेश ने खड़ी बोली हिंदी के लिए प्रवाहमयता और जीवनदायनी का कार्य किया। इसी क्रम में आज 'हिंग्रेज़ी'** का इस्तेमाल जीवनदायनी परंपरा का एक अंग है।

* शिक्षित वर्ग द्वारा शिक्षित जन के लिए भाषा का सरलीकरण एवं सर्वस्वीकृत स्वरूप का निर्माण करना मानकीकरण कहलाता है।

** अंग्रेज़ी के साथ हिंदी के शब्दों का ऐसा प्रयोग जो एक साथ–मिलकर नये शब्द व अर्थ गढ़ते हैं जैसे– कार, रेल, कंप्यूटर, साईकिल इत्यादि।

पहले जहाँ मोबाइल फ़ोन में भाषा के रूप में अंग्रेज़ी ही एकमात्र विकल्प हुआ करता था और हिंदी भाषी जनमानस 'रोमन-हिंदी' (आज-Aaj) लिखा करते थे, वहीं अब फ़ोन में अन्य भाषाओं के साथ हिंदी भाषा का भी विकल्प मौज़ूद है। आज खड़ी बोली हिंदी में छपने वाले समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। सड़कों पर लगने वाले साइन बोर्डों पर अंग्रेज़ी के साथ खड़ी बोली हिंदी का इस्तेमाल, विश्व की अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद कार्य, विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी को अनिवार्य विषय की श्रेणी में रखना, टाईपिंग के लिए हिंदी के विभिन्न प्रकार के फॉण्टों का प्रयोग जैसे- क्रुति देव, चाणक्य, मंगल इत्यादि ने खड़ी बोली हिंदी को एक व्यापक भाषा बनाने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिंदी सिनेमा का उल्लेख किए बिना ये बात पूरी नहीं हो सकती, गैर हिंदी भाषी वर्ग चाहे वे भारत के भीतर हों अथवा बाहर उनके बीच में हिंदी को लोकप्रिय बनाने का काम हिंदी सिनेमा के माध्यम से ही संभव था। हिंदी भाषा के इतने बड़े स्तर पर प्रयोग के बावजूद विडंबना यह है कि भारत के भीतर ही इसे हेय तथा अंग्रेज़ी भाषा से कमतर समझा जाता रहा है। हिंदी के आधुनिक काल के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने 'मातृभाषा की उन्नति को व्यक्ति की सभी उन्नतियों का मूल माना है।' लेकिन यह दुर्भाग्य ही है कि तमाम भारतीयों को आज अपनी उन्नति अंग्रेज़ी भाषा की उन्नति के साथ ही दिखाई देती है। निजी अथवा प्राइवेट विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों ने सरकार के सारे नियम-कायदों को ताक पर रखकर हिंदी को प्रमुख तो छोड़िए एक अद्द विषय के रूप में भी अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना ज़रूरी नहीं समझा है।

विकासशील और मॉडर्न (आधुनिक) बनने की इस अन्धी दौड़ में केंद्र एवं राज्य सरकारों का इस ओर से आँख मूँद लेना एक दूसरा आश्चर्य है। हिंदी की सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी दिवस तथा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाने की खानापूर्ति प्रत्येक वर्ष होती है। जिसका मुख्य उद्देश्य विदेशों में सैर सपाटे से ज़्यादा कुछ नहीं होता। गौर करने वाली बात ये भी है कि इन शिष्ट मंडलों में साल-दर-साल वही पुराने लेखक एवं साहित्कार जन ही शामिल रहते हैं। उभरते हुए अथवा नये साहित्यकारों का इसमें शामिल होना एक टेढ़ी खीर है। यद्यपि भारत के भीतर ही गैर हिंदी भाषी राज्यों ने खड़ी बोली हिंदी के प्रयोग पर हमेशा से आपत्ति दर्ज़ की है। इन राज्यों की आपत्तियों को सिरे से खारिज भी नहीं किया जा सकता है। किन्तु साथ ही ये भी समझने की आवश्यकता है कि विदेशों में भारत की भाषा के रूप में जो लोकप्रियता हिंदी भाषा को प्राप्त है, वह अन्य भारतीय भाषाओं को नहीं।

एक स्थापित मानक स्वरूप, सरल उच्चारण, निश्चित लिपि, अन्य भाषाओं के शब्दों का इसमें एकसार हो जाना एवं मानक वर्णक्रम ये कुछ ऐसे कारक हैं, जो खड़ी बोली हिंदी को भाषा के रूप में स्थापित करने के साथ उसकी लोकप्रियता को भी बढ़ाते हैं। इन तमाम मुश्किलों के बाद भी हिंदी को एक विश्वव्यापी स्वरूप देने की कावायत जारी है, उम्मीद है कि ये कोशिशें सकारात्मक परिणाम देंगी।

इस प्रकार हम देखतें है कि जैसे-जैसे सामाजिक परिवर्तन होते गए वैसे-वैसे खड़ी बोली हिंदी भाषा एवं साहित्य के रूप में विकसित भी होती गई। इस संबंध में रामविलास शर्मा का स्पष्ट मत है कि, "सामाजिक विकास से भाषा के विकास का घनिष्ठ संबंध है।"[3] यहाँ सामाजिक स्थिति भाषा के लिए एक पक्की नींव का काम करती है, जैसे मुगल शासन के प्रभाव से अरबी-फ़ारसी बहुल शब्दों से युक्त भाषा बनी, अंग्रेज़ों के शासन काल में उनकी 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति के कारण खड़ी बोली हिंदी का विकास उर्दू व हिंदी के अलग-अलग रूप में हुआ। वहीं भारतेंदु काल में जनजागृति फैलाने के उद्देश्य से लोक-लुभावन पद्य शैली का विकास हुआ, जिसकी भाषा ब्रज थी। जबकि गद्य का विकास यथा संभव खड़ी बोली में हुआ और साहित्य के क्षेत्र में नाटक, पत्रकारिता का प्रवेश हुआ जिससे खड़ी बोली हिंदी को और अधिक विस्तृत क्षेत्र मिला। इस प्रकार धीरे-धीरे सामाजिक परिवर्तन के फलस्वरूप खड़ी बोली अपने श्रेष्ठ रूप को प्राप्त कर 'राष्ट्रभाषा' के आसन पर बैठी हुई है। यह बहुत बड़े सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिवर्तन के प्रभाव का ही कारण है, जिसके परिणामस्वरूप ब्रज भाषा आज बोली के रूप में तथा खड़ी बोली, हिंदी भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. चौहान, शिवदान सिंह. 1961. *हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष*, राजकमल प्रकाशन द्वितीय संस्करण, पृ-26
2. शुक्ल, रामचन्द्र. 1997. *हिंदी साहित्य का इतिहास*, कमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ-304
3. पाडेण्य, मैनेजर. 2005. *साहित्य और इतिहास दृष्टि*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ-182